साहित्य का नोबेल पुरस्कार कम्युनिज़्म विरोधी प्रचार मुहिम का एक अंग है

इस बार का साहित्य का नोबेल पुरस्कार रोमानिया की लेखिका हेर्ता म्यूलर को समाजवादी रोमानिया में विस्थापितों के दर्द को बयान करने वाली उनकी कृतियों के लिए दिया गया है। नोबेल पुरस्कार समिति बीच-बीच में साहित्य की दुनिया में अनजान ऐसे लेखकों को पुरस्कृत करने के लिए ढूँढ़-ढूँढ़ कर निकालती रहती है जिनका लेखन कम्युनिज़्म के विरुद्ध प्रचार में इस्तेमाल किया जा सकता है। हेर्ता म्यूलर भी इन्हीं लेखकों की क़तार में शामिल हैं।

रोमानिया में बसे जर्मन लोगों के विस्थापन को दर्शाने वाली उनकी कृतियों का कोई विश्वस्तरीय साहित्यिक मूल्य नहीं है मगर उनका महत्व इस बात में है कि विस्थापितों की पीड़ा को वे तथाकथित समाजवाद से जोड़कर दर्शाती हैं। यह अलग बात है कि वे जिस ''समाजवादी रोमानिया'' का चित्रण करती हैं दरअसल वह समाजवाद था ही नहीं बल्कि समाजवाद के खोल में सामाजिक फासीवादी सत्ता थी। 1956 में ख्रुश्चेव के नेतृत्व में सोवियत संघ में पूँजीवाद की पुनर्स्थापना मुकम्मल किये जाने के बाद रोमानिया, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, बल्गारिया, पूर्वी जर्मनी आदि पूरे पूर्वी यूरोप में समाजवाद के नाम पर नये नौकरशाह पूँजीपति वर्ग की अगुवाई में जो सामाजिक फासीवादी तन्त्र स्थापित हुआ उसमें वे पूँजीवाद की तमाम बुराइयों के साथ जातीय-भाषाई अल्पसंख्यकों के साथ भेदभाव और उत्पीड़न भी शामिल था। मगर इसका समाजवाद से कोई सम्बन्ध नहीं था।

राजकीय पूँजीवाद का संचालन करने वाले अल्पसंख्यक अभिजात वर्ग के कुकृत्यों को समाजवाद के मत्थे मढ़कर समाजवाद को बदनाम करने का खेल बुर्जुआ मीडिया शीतयुद्ध के दिनों से ही खेलता आ रहा है। यह भी उसी मुहिम का एक हिस्सा है।

नोबेल पुरस्कार किस क़दर राजनीति से निर्धारित होते हैं यह अब कोई रहस्य की बात नहीं रह गयी है। ख़ासकर साहित्य के पुरस्कारों में कम्युनिज़्म विरोध की राजनीति बहुत साफ़ तौर पर दिखती रही है। एक ओर ढूँढ़-ढूँढ़कर ऐसे लेखकों को पुरस्कृत किया जाता है जिनके ज़रिये कम्युनिज़्म को बदनाम किया जाये दूसरी ओर ऐसे लेखकों की बहुत बड़ी संख्या है जिन्हें उनके समाजवादी विचारों के कारण पुरस्कृत होने लायक़ नहीं समझा गया।

> "अब क्रान्ति में ही देश का उद्धार है, ऐसी क्रान्ति जो सर्वव्यापक हो, जो जीवन के मिथ्या आदर्शों का, झूठे सिद्धान्तों और परिपाटियों का अन्त कर दे। जो एक नये युग की प्रवर्तक हो, एक नयी सृष्टि खड़ी कर दे, जो मनुष्य को धन और धर्म के आधार पर टिकने वाले राज्य के पंजे से मुक्त कर दे।" — **प्रेमचन्द ('कर्मभूमि' से)**

दुनिया के सबसे बड़े हत्यारे गिरोह के सरगना ओबामा का "शान्ति" का नोबेल पुरस्कार!!

लगता है कि नोबेल पुरस्कार समिति खुद ही नहीं चाहती कि नोबेल पुरस्कारों की राजनीति के बारे में लोग भ्रम में रहें। शायद इसीलिए इस बार का शान्ति का नोबेल पुरस्कार अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को दिया गया है।

ओबामा ने भी यह भ्रम बनाये रखने की कोई कोशिश नहीं की और अपने पुरस्कार स्वीकार भाषण में साफ़ कर दिया कि उनके लिए शान्ति का मतलब है युद्ध! इराक़ और अफ़ग़ानिस्तान पर अमेरिकी हमलों को जायज़ ठहराते हुए उन्होंने फ़रमाया कि ये सारे युद्ध दरअसल शान्ति के लिए उनके प्रयासों का ही हिस्सा हैं। वैसे अमेरिका पिछले सौ साल से लगातार ऐसी "शान्ति" के लिए प्रयासरत है। पिछले सौ सालों के दौरान उसने विश्व शान्ति की खोज में परमाणु बम बनाया, उसे दो शहरों पर गिराकर लाखों लोगों को मौत के घाट उतारा, सौ से अधिक बार विभिन्न देशों पर हमला किया, अनगिनत देशों में तख़्तापलट कराया, दुनिया को कई बार तबाह कर देने लायक़ हथियार बनाये और उन्हें बेचने के लिए दुनिया भर में युद्ध भड़काये, भयानक घातक रासायनिक हथियार बनवाये... फिर भी दुनिया ज़्यादा से ज़्यादा अशान्त होती जा रही है, तो इसमें बेचारे अमेरिका और उसके शासकों का क्या दोष?

ओबामा ने एक बात सही कही – कि स्थायी शान्ति केवल एक "न्यायपूर्ण युद्ध" से ही आ सकती है। वे मुनाफ़े की हवस में छेड़े गये अपने युद्धों को "न्यायपूर्ण" बता रहे हैं लेकिन वास्तव में "न्यायपूर्ण युद्ध" वह होगा जो दुनिया से पूँजीवाद और साम्राज्यवाद के ख़ात्मे के लिए छेड़ा जायेगा।

(पृष्ठ 47 से आगे)

जुटाने वाले अनुचर बने रहेंगे। विज्ञान और प्रौद्योगिकी भी पूरी तरह ऐसे ही समाज में विकास कर सकेंगे जो मुनाफ़े की भूख से नहीं बल्कि मानवता के साझा हित की भावना से प्रेरित और संचालित होगा।

बहुत से वैज्ञानिक और विज्ञान के विद्यार्थी प्राय: ऐसा कहते हैं कि वैज्ञानिक तो निष्ठापूवर्क अपना काम करता है, यह देखना उसका काम नहीं है कि उसके काम के नतीजे क्या होते हैं। ऐसे लोगों से हम यही कह सकते हैं कि वैज्ञानिक का आविष्कार और उसका प्रभाव सामाजिक ढाँचे से निरपेक्ष नहीं हो सकता। जैसा कि प्रसिद्ध जर्मन कवि व नाटककार बेर्टोल्ट ब्रेष्ट ने कहा है:

"वैज्ञानिक अक्सर दावा करते हैं कि उनके शोध के परिणाम उनके प्रभावों से जुदा होते हैं...। मगर विज्ञान में कोई शाश्वत सत्य नहीं होता। E=Mc2 का फ़ार्मूला शश्वत और स्वतंत्र बताया जाता है लेकिन इसी का प्रभाव यह होता है कि हिरोशिमा दुनिया के नक्शे से मिट जाता है।"